श्रमण २००२ ०१ (फोल्डर नं. ०२५०४६)

सम्पादक - डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
स्व. भँवरलालजी नाहटा – एक युगपुरु एवं अनुपम प्रेरणा स्रोत ---------- १
डॉ. सागरमल जैन द्वारा गुणस्थान सिद्धान्त की गवेषणा – डॉ. धर्मचन्द जैन ----------१३
पार्श्वनाथ के सिद्धान्त-दिगम्बर-श्वेताम्बर दृष्टि – प्रो. सुदर्शन लाल जैन ---------- २५
हिन्दी काव्य परम्परा में अपभ्रंश महाकाव्यों का महत्त्व – डॉ. साध्वीजी श्री मधुबाला ---------- ३३
भारतीय आर्य भाषाओं की विकास यात्रा में अपभ्रंश का स्थान – डॉ. साध्वीजी श्री मधुबाला ------- ३९
प्रकीर्णक साहित्य-एक अवलोकन – डॉ. अतुल कुमार प्रसाद सिंह ---------- ४४
जैन संस्कृति में पर्यावरण चेतना – डॉ. श्री रञ्जनसूरिदेव ---------- ६३
पादलिससूरिरचित तरंगवईकहा – श्री वेदप्रकाश गर्ग ---------- ६८
नाट्यशास्त्र और अभिनवभारती में शान्तरस की अभिनेयता प्रतिपादन और विश्वशान्ति इसकी उपादेयता – डॉ. मधु अग्रवाल ---------- ७१
मोक्ष मार्ग में सम्यग्दर्शन की भूमिका – डॉ. कमलेश कुमार जैन---------- ८०
समराइच्चकहा में व्यवसायों का सामाजिक आधार – राघवेन्द्र प्रताप सिंह ---------- ८७
जैन दर्शन में परमात्मा का स्वरूप एवं स्थान – श्रीमती कल्पना ---------- ९६
जैनागमों में भारतीय शिष्या के मूल्य – दुलीचन्द जैन ---------- १००
गांधी चिन्तन में अहिंसा एवं उसकी प्रासंगिकता – राजेन्द्र सिंह ---------- १०७
खरतरगच्छ-आद्यपक्षीयशाखा का इतिहास – डॉ. शिवप्रसाद ----------११३
Jaina Campu Literature – Dr. A. K. Singh ---------- 122
Misunderstanding vis-à-vis understanding with reference to Jainism – Dr. Rajjan Kmar ---------- 132
विद्यापीठ के प्रांगण में ---------- १४६
जैन जगत् ---------- १५८
साहित्य सत्कार ---------- १७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org